8

क्षेत्रीय संस्कृतियों का उत्कर्ष

एक मशहूर कहावत है 'कोस–कोस पर पानी बदले और सात कोस पर वाणी'। यह कहावत सुनते ही कक्षा के सभी बच्चे एक दूसरे की तरफ देखने लगे। तभी मोहन ने पूछा:–"मास्टरजी आपने ऐसा क्यों कहा और इसका मतलब क्या है" ? मास्टरजी बोले " इसका मतलब है कि हर दो तीन किलोमीटर पर पानी का स्वाद और स्तर बदल जाता है और हर बीस–इक्कीस किलोमीटर पर भाषा में परिवर्तन हो जाता है"। इस अध्याय में हम क्षेत्रीय भाषा एवं साहित्यों के बारे में पढ़ेंगे।

© BSTBPC
WEBCOPY NOT TO BE REPUBLISHED

गुप्तों के विशाल साम्राज्य के विघटन के परिणाम स्वरूप लगभग छठी शताब्दी से क्षेत्रीय राजनैतिक शक्तियों के अभ्युदय का सिलसिला शुरू हुआ। सातवीं एवं आठवीं शताब्दी तक जिन नए राज्यों का अस्तित्व उभर कर सामने आया, उनमें पाल, गुर्जर, प्रतिहार, राष्ट्रकुट, पल्लव तथा चोल आदि प्रमुख थे। इन राज्यों के विषय में आप दूसरे पाठ में पढ़ चुके हैं। नये राज्यों के कारण भाषा–साहित्य, चित्रकला एवं संगीत जैसे क्षेत्रों में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है। परिणामस्वरूप उत्तर भारत में जहाँ बंगला, असमिया, मैथिली, उड़िया व अवधी जैसे क्षेत्रीय भाषाओं में विकास के संकेत मिलते हैं, वहीं दक्षिण के राज्यों में तमिल एवं मलयालम जैसे क्षेत्रीय भाषाओं के विकास को भी अभूतपूर्व प्रोत्साहन मिला। क्षेत्रीय संस्कृतियों के उत्कर्ष के इस महत्वपूर्ण दौर में आनेवाले शताब्दियों में अखिल भारतीय स्तर पर उर्दू तथा हिन्दी भाषा के विकास ने इनके साहित्य का बड़ा भंडार निर्मित किया, वहीं दूसरी तरफ इस काल में अपनी क्षेत्रीय पहचान को समृद्ध और संवर्द्धित करने के क्रम में चित्रकला एवं संगीत के क्षेत्रों में भी कालान्तर में अभूतपूर्व प्रगति हुई। इन सबके मिले–जुले प्रभाव के कारण इन क्षेत्रों में सांस्कृतिक जीवन का आधार महत्वपूर्ण ढंग से विस्तृत एवं व्यापक बना।

www.absol.in

भाषा एवं साहित्य–

क्षेत्रीय भाषाओं की उत्पत्ति लगभग आठवीं से दसवीं शताब्दी के बीच हुई। कई राज्यों में संस्कृत के साथ–साथ तमिल, कन्नड़ एवं मराठी का प्रयोग प्रशासन में किया जाने लगा। विजयनगर साम्राज्य में तेलगु साहित्य का विकास हुआ। बहमनी राज्य में मराठी प्रशासन की भाषा रही। बाद में इन भाषाओं के विकास में मुस्लिम शसकों ने भी योगदान दिया। उदाहरणस्वरूप बंगाल के शासक नुसरत शाह ने 'रामायण' एवं 'महाभारत' का बंगाली में अनुवाद कराया।

दिल्ली के शासकों ने भाषा और साहित्य के विकास को बढ़ावा दिया जिसके कारण, हिन्दी, उर्दू, बंगला जैसी अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को पहचान मिली। आम आदमी विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग बोलियाँ बोलते थे जो सामूहिक रूप में अपभ्रंश कहलाती थीं। इसी अपभ्रंश से उर्दू, हिन्दी, पंजाबी, बंगला आदि भाषाओं की उत्पत्ति हुई। उर्दू एक मिश्रित (जिसमें अरबी, फारसी, एवं तुर्की शामिल है) भाषा है। इसकी लिपि फारसी है लेकिन व्याकरण के नियम अन्य भाषाओं के जैसे ही हैं। फारसी के विकास के लिए लाहौर पहला केन्द्र बना।

उर्दू भाषा की उत्पत्ति एवं विकास ग्यारहवीं शताब्दी से शुरू हुआ। इसके दो कारण थे–पहला, विभिन्न मातृभाषा वाले सैनिक आपसी बातचीत के लिए जिस भाषा का प्रयोग करने लगे वह उर्दू कहलायी। उर्दू का शाब्दिक अर्थ शिविर या खेमा है। दूसरा– सूफी संतों द्वारा धर्म प्रचार और उपदेश देने के क्रम में इसका विकास हुआ। सूफी संतों के योगदान ने इसे और सम्पन्न बनाया। चौदहवीं शताब्दी में अमीर खुसरू ने इस भाषा को 'रेख्ता' एवं 'हिन्दवी' का नाम दिया और इसमें काव्य रचना की। खुसरू की रचना का एक उदाहरण है।

''गोरी सोये सेज पर
मुख पर डाले केश
चल खुसरू घर आपने
रैन भई चहूँ देश''

अमीर खुसरू की कुछ और उर्दू काव्य रचनाओं को एकत्रित करें।

दक्षिण भारत में जिस उर्दू का विकास हुआ वह दक्कनी कहलायी। आठारहवीं शताब्दी के अंत तक उर्दू 'हिन्दवी' हिन्दी' या दक्कनी कही जाती थी और लोग उर्दू भाषा को 'हिन्दुस्तानी' या 'दक्कनी' के नाम से पुकारते थे। मुगल काल में उर्दू मुगलों की मातृभाषा बन गयी और घर, दरबार तथा शिविरों में बोली जाने लगी।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

हिन्दी को विभिन्न क्षेत्रों में। किन–किन नामों से जाना जाता था

'हिन्दी', हिन्द' हिन्दवी' और हिन्दुस्तान जैसे शब्दों का सम्बन्ध भारत के उत्तर पश्चिम भाग में बहने वाली सिंधु नदी से है। भारत व ईरान के बीच प्राचीन काल से ही संबंध बना हुआ है। ईरानी सिंधु को हिंदु कहते थे। 'हिंदु' से 'हिंद' बन गया। ईरान के लोगों ने जब इस शब्द में 'इक' प्रत्यय लगाया तब वह शब्द 'हिंदीक' बन गया जिसका अर्थ होता है ' हिन्द का'। तभी से हिंद की भाषा 'हिन्दी' कही जाने लगी।

सल्तनत काल में हिंदी साहित्य के कई रूपों का उदय हुआ, जिनमें प्रमुख है–जैन,लौकिक एवं गद्ध साहित्य। जैनों ने साहित्य की रचनाएँ की लेकिन उनकी अधिकतर रचनाएँ इस काल में संस्कृत में ही रहीं। हेमचन्द्र सूरि ने जैन साहित्य की रचना के क्षेत्र में अपना योगदान दिया।

लौकिक साहित्य में 'ढोला–मारूहा' नामक प्रसिद्ध लोक–भाषा काव्य लिखा गया। इसमें ढोला नामक राजकुमार और मारवाणी नाम की राजकुमारी की प्रणय कथा का वर्णन है। इस कविता में स्त्री के कोमल भावों का बहुत ही मार्मिक वर्णन है। समकालीन लौकिक हिन्दी साहित्य के अमर कवि अमीर खुसरू हैं। अमीर खुसरू ने हिन्दी में बहुत सी पहेलियों की रचना की है, जो आज भी प्रचलित है। उनमें से एक पहेली नीचे दी गयी है :–

तरवर से एक तिरिया उतरी, उसने बहुत रिझाया।
बाप का उसने नाम जो पूछा, आधा नाम बताया।।
आधा नाम पिता पर प्यारा, बूझ पहेली गोरी।
अमीर खुसरू जो कहें, अपने नाम न बोली निबोरी।।

© BSEBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

गद्य साहित्य और इतिहास लेखन कला का भी इस युग में विकास हुआ। जियाउद्दीन बरनी, अफीफ और एसामी इस युग के प्रसिद्ध इतिहासकार थे। इनके विषय में आप पाठ दो और तीन में पढ़ चुके हैं। जिया नक्शवी ने 'तुतीनामा' नामक पुस्तक की रचना की जिसमें तोता एक ऐसी विरहणी नायिका को कहानी सुनाता है जिसका पति यात्रा पर गया था। यह कहानी मूल रूप से संस्कृत में था, जिसका जिया नक्शवी ने फारसी में अनुवाद किया था।

सल्तनत काल में हिन्दी साहित्य के विकास की जो प्रक्रिया शुरू हुयी थी,

उसमें मुगल काल में तेजी आयी। इस काल में हिन्दी केवल दरबार और शाही महलों तक सीमित न रहकर, एक जन आन्दोलन के रूप में विकसित होने लगी। सभी मुगल बादशाहों ने हिन्दी को संरक्षण प्रदान किया। लेकिन अकबर के समय यह विकास के शिखर पर था। सोहलवीं सत्रहवीं शताब्दी में क्षेत्रीय भाषाओं में परिपक्वता आयी तथा उत्कृष्ट संगीतमय काव्य की रचना हुयी। बंगाली, उड़िया, हिन्दी, राजस्थानी तथा गुजराती भाषाओं के काव्य में राधाकृष्ण एवं गोपियों की लीला तथा भागवत की कहानियों का काफी प्रयोग होता रहा। इसी समय अलाओल ने जौनपुर के मल्लिक मुहम्मद जायसी द्वारा हिन्दी में रचित 'पद्मावत' का बंगला में अनुवाद किया। इस काव्य में अलाउद्दीन खिलजी के चित्तौड़ अभियान को आधार बनाकर एक प्रेम कहानी लिखि गई।

अब्दुर रहीम खान–ए–खाना

अकबर के नवरत्नों में से एक अब्दुर्रहीम खान–ए–खाना थे, जो रहीम के उपनाम से प्रसिद्ध थे। इन्होंने हिन्दी में बहुत से दोहों की रचनाएँ कीं। इनके द्वारा लिखित दोहे आज भी हमारे समाज में प्रचलित हैं और लोग इसे बहुत ही चाव से गाते हैं। उनके द्वारा लिखित दोहों के कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

रहिमन विपदा तू भली।
जो थोड़े दिन होय।।
हित अनहित या जगत में
जान पड़े सब कोई।।

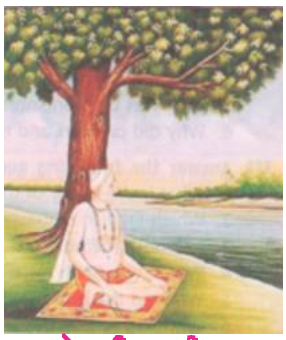

बिगड़ी बात बने नही।
लाख करें कि होय।।
रहिमन बिगड़ी दूध के।
मथे न मक्खन होय।।

गोस्वामी तुलसीदास

अक्बर के समय में क्षेत्रीय भाषाओं में भी बहुत सी श्रेष्ठ रचनाएँ हुईं। उसके शासन काल में ही तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' की रचना अवधी भाषा में की, जिसके नायक राम थे। इसी समय मुगल सम्राट एवं हिन्दू राजा ने

आगरा एवं आस पास के क्षेत्रों में बोली जाने वाली ब्रजभाषा को भी प्रोत्साहित किया। कवि सूरदास का इस भाषा लेखन में महत्वपूर्ण योगदान था।

दक्षिण भारत में मलयालम भाषा की साहित्यिक परम्परा की शुरुआत मध्यकाल में ही हुई। महाराष्ट्र में एकनाथ एवं तुकाराम ने मराठी भाषा को काफी विकसित किया।

बिहार राज्य अनेक भाषाओं का क्षेत्र रहा है इसमें से कुछ भाषाएँ देशव्यापी स्तर पर बोली जाती हैं और कुछ का स्वरूप स्थानीय है। हमारे प्रदेश का न केवल राष्ट्रीय भाषा, बल्कि स्थानीय भाषा और बोलियों के विकास में भी महत्वर्पूण योगदान रहा है। मध्यकाल में बहुत से ईरानी यात्रियों ने इस क्षेत्र में रहने वाले विद्वानों एवं कवियों की चर्चा की है। बिहार के चण्देश्वर इस काल के प्रमुख टीकाकार थे, जिन्होंने सूफी संतों से प्रभावित होकर धर्म की व्याख्या की थी। देश के हिन्दी भाषी राज्यों में इस क्षेत्र का महत्वर्पूण स्थान है। यहाँ हिन्दी की उत्पत्ति 'मगधी' अपभ्रंश से हुई है। इसके अलावा क्षेत्रीय भाषा मैथिली, मगही एवं भोजपुरी का उद्‌भव हुआ, जिसका उर्दू के विकास में भी योगदान रहा।

बिहार की भाषाओं में मैथिली भाषा सबसे उन्नत एवं विकसित है। यह तिरहुत क्षेत्र के दरभंगा प्रमंडल में बोली जाती है। इस भाषा के प्रयोग के लिए एक अलग लिपि का विकास किया गया है, जिसे मैथिली लिपि कहते हैं। यद्यपि प्राचीन काल से ही मैथिली भाषा बोली जाती रही है परन्तु इसके वर्त्तमान स्वरूप का उदय दसवीं शताब्दी में हुआ।

विद्यापति मैथिली के एक प्रसिद्ध कवि थे। उन्होंने कविता के माध्यम से मैथिली साहित्य को बहुत ऊँचाई तक पहुँचाया। अपनी कविता के द्वारा मध्यकालीन मिथिला के समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध किया। इसके अलावे विद्यापति ने धार्मिक भावनाओं से जुड़ी रचनाएँ भी लिखीं, जो जनमानस को गहराई तक प्रभावित करती रहीं। विद्यापति की रचना, जिसमें उन्होंने गंगा नदी के प्रति श्रद्धा व्यक्त किया है–

''बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे।
छोड़इत निकट नयन बहु नीरे।।''

इसी तरह प्रचीनकाल से चली आ रही मगधी भाषा ने मगही का रूप धारण किया और उसी के अपभ्रंश से उत्पन्न होने वाली बोलियों में भोजपुरी, बिहार के पश्चिमी और उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्रों में बोली जाती हैं। भोजपुरी भाषा की उत्पत्ति

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

लगभग आठवीं शताब्दी में हुयी थी। यद्यपि भोजपुरी साहित्य का क्रमबद्ध इतिहास नहीं मिलता है और इसका लिखित साहित्य कम उपलब्ध है, परन्तु इसकी मौखिक परम्परा लोकगीतों और लोक कथाओं के रूप में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। कबीर इस काल के प्रख्यात कवि थे जिनके दोहे धर्म निरपेक्षता पर आधारित होते थे।

इस तरह उर्दू, हिन्दी, बंगला, मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि भाषाओं एवं उनके साहित्य के विकास में इस प्रदेश का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जिसमें तुर्क एवं मुगल शासकों की अहम् भूमिका थी।

चित्रकला

मध्यकाल से पहले भारत में चित्रकला को राजाओं का संरक्षण प्राप्त था। जैन, बौद्ध, राजपूत एवं अन्य हिन्दू राजाओं ने प्राचीन भारत में चित्रकला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सातवीं–आठवीं शताब्दी के चित्र समूचे भारत में लघु चित्रों से संबंध जोड़ते हैं।

तुर्की शासन काल में भी लघु चित्रकला शैली भारत में विभिन्न नामों से जीवित बनी रही। उनमें प्रमुख थे–जैन चित्रकारी व पश्चिमी भारतीय शैली। समकालीन फारसी एवं हिन्दी ग्रंथों में अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में भित्ती चित्रों, पाडुलिपी चित्रों और कपड़े पर बने चित्रों के प्रमाण भी मिले हैं। सल्तनत कालीन चित्रों में आम जीवन के दृश्यों, शिकार के दृश्यों तथा लोक कथानकों के चित्र शामिल हैं। इनमें सुनहरे रंगों का खुलकर प्रयोग किया गया है।

सल्तनत कालीन लघु चित्र

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

मुगलों के पहले शयन कक्षों में भित्ती चित्रों के रूप में चित्रकारी बहुत लोकप्रिय थी। लेकिन समय के थपेड़ों के कारण केवल नाम मात्र के चित्र ही शेष बचे हैं। दिल्ली सल्तनत कालीन चित्रकला के बिखरे और बचे खुचे अवशेष हमें चम्पानेर एवं सरहिन्द के मुगल पूर्व स्मारकों और सीरी एवं बेगमपुर के मध्य स्थित मखदुमावाली मस्जिद से मिले हैं। भित्ती चित्रों के ये अवशेष फूल–पत्तियों और वनस्पतियों के रूप हैं।

कुछ प्रांतीय शासकों ने भी चित्रकला को संरक्षण दिया। उनके समय में बनाए गए

चित्रों का उल्लेख विशेष रूप से जौनपुर और बंगाल में मिला है। प्रांतीय चित्रकला में लघुचित्रों की प्रधानता थी, जिसमें लाल और कुछ चित्रों में नीली, हरी और पीली पृष्ठभूमि होती थी।

भारत में मुगलों ने चित्रकला की जिस शैली की नींव डाली वह मुगल चित्रकला के नाम से जानी जाती है। इसमें जो पहली महत्वपूर्ण कृति है 'दास्ताने–अमीर हम्ज़ा' या हम्जानामा' है। यह एक दुर्लभ पांडुलिपि के रूप में उपलब्ध है। इसमें 1200 चित्र हैं। सारे चित्र स्थूल और चटकीले रंगों में कपड़े पर बने हुए हैं।

अकबर के शासनकाल में चित्रकला का जो विकास हुआ उसमें अकबर की व्यक्तिगत रुची का महत्वपूर्ण योगदान है। अकबर के समय चौड़े ब्रश की जगह गोल ब्रश और गहरे नीले और लाल रंग का अधिक प्रयोग किया जाने लगा। उसके राज दरबार में जसवंत और दसावन नामक प्रसिद्ध चित्रकार थे, जिन्होंने फारसी कहानियों को चित्रित करने का कार्य किया। 'महाभारत' एवं 'अकबरनामा' जैसे ग्रंथों की चित्रकारी इन्हें ही सौंपा गया था। इस काल में यूरोपीय चित्रकला का प्रभाव मुगल चित्रकला पर दिखने लगा। यूरोपियों चित्रकला के कुछ नमूने पूर्तगालियों के द्वारा अकबर के दरबार में पहुँचे। इनमें से मुगलों ने दो विशेषताओं को ग्रहण किया, पहला–व्यक्ति विशेष के चित्र को बनाना, दूसरा–दृश्य में आगे दिखने वाली वस्तुओं को छोटे आकार प्रदान करना। मुगल काल में शिकार के दृश्य, पशु–पक्षी तथा फूलों के चित्र विशेष रूप से बनाए जाते थे। राजस्थानी चित्रकला शैली एवं पश्चिम भारत की चित्रकारी भी मुगलों की शैली से प्रभावित हुई।

औरंगजेब के समय से चित्रकला का पतन आरंभ हो गया। जब मुगल दरबार में इनको आश्रय नहीं मिला तो छोटे–छोटे स्थानीय राजाओं और सामंतों ने इन्हें संरक्षण दिया और इन क्षेत्रों में अलग तरह की चित्रकला शैली का विकास हुआ। इस अध्याय में पहाड़ी चित्रकला एवं पटना कलम के बारे में हम विशेष रूप से पढ़ेंगे।

पहाड़ी चित्रकारी

उत्तर पश्चिमी हिमालय क्षेत्र के विभिन्न पहाड़ी राज्यों में की जाने वाली चित्रकारी पहाड़ी चित्रकारी कहलाती है। इस क्षेत्र में वर्त्तमान हिमाचल प्रदेश, जम्मु और उत्तर प्रदेश का टेहरी गढ़वाल का क्षेत्र आता है।

पहाड़ी चित्रकारी

पहाड़ी चित्रकारी में पारम्परिक विषयों पौराणिक गाथाओं के अतिरिक्त बालिकाओं को गेंद खेलते हुए या संगीत–साज बजाते या पक्षियों या पशुओं से अपना मनोरंजन करते हुए चित्रों को बनाया गया है। इसके अलावा राजा–महाराजाओं के एकल या दरबारियों के साथ भी चित्रों को बनाया गया है। प्राकृतिक दृश्यों में फैली हुई शाखाओं वाले पत्तीदार घने और बड़े पेड़ों का चित्रण किया गया है, जो चित्र में फलों से लदे हुए हैं। यही नहीं तारों भरे आकाश, आंधी–तूफान और आकाश के अंधेरे में चमकती हुई बिजली के दृश्य भी बनाए गए हैं।

मुगलकालीन चित्र व पहाड़ी चित्रों में क्या अंतर है ?

पहाड़ी चित्रकला में भड़कीले लाल, नीले और नारंगी रंग से लेकर हल्के पेंसिल रंगों का उपयोग किया जाता है। वस्त्रों, बर्तनों, सिंहासनों, कुर्सियों और कालीनों आदि के लिए सोने और चाँदी के रंगों का प्रयोग किया गया। पहाड़ी चित्रकला में रंग की कई परतें चढ़ायी जाती थीं। रंग की एक परत चढ़ाने के बाद उसे सूखने दिया जाता था और सूखने के बाद फिर से चमका कर दूसरी रंग की परत चढ़ायी जाती थी। अंत में रेखाचित्र को काले या लाल आदि रंगों से गहरा किया जाता था।

© KTBS
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

पटना कलम

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण जब शाही दरबार में इन कलाकारों को प्रश्रय नहीं मिला तो ये अन्य क्षेत्रों में रहने लगे। 1760 के लगभग ये चित्रकार संरक्षण की खोज में बंगाल में मुर्शीदाबाद पहुँचे। उसके बाद कुछ चित्रकार पटना में भी आकर बसे। इन्होंने लोदीकटरा, मच्छरहट्टा, आरा तथा दानापुर में बसकर चित्रकला के क्षेत्रीय रुप को विकसित किया। यह चित्रकला शैली ही 'पटना कलम' या 'पटना शैली' कहलायी। पटना कलम के अधिकांश चित्रकार

पुरुष हैं, अतः इस शैली को पुरुषों की चित्रकला शैली भी कही जाती है। पटना कलम के चित्र लघु चित्रों की श्रेणी में आते हैं, जिन्हें अधिकतर कागज और कहीं–कहीं हाथी दांत पर भी बनाया गया है। इस शैली में व्यक्ति विशेष पर्व–त्योहार, एवं उत्सव तथा जीव–जन्तुओं को महत्व दिया गया। इस शैली में ब्रश से ही तस्वीर बनाने और रंगने का काम किया जाता था। इसमें गहरे भूरे, गहरे लाल, हल्के पीले और गहरे नीले रंगों का प्रयोग किया गया है।

संगीत

सल्तनत काल भारतीय संगीत के इतिहास में नये प्रयोगों का युग था। इस काल में रबाब, सारंगी एवं नवीन वाद्यों, गायन पद्धतियों तथा रागों आदि का आविष्कार हुआ। मध्यकालीन संगीत–परंपरा के संस्थापक प्रसिद्ध कवि, इतिहासकार एवं दार्शनिक अमीर खुसरू थे। सूफियों ने भी संगीत का खूब प्रचार प्रसार किया। ये गज़ल के रूप में खुदा की इबादत करते थे जो प्रेम काव्य के रूप में होती थी। ये 'सूफी संत' खानकाहों में गज़लों को गाते थे और भक्तिमय हो जाते थे।

दरगाह में कव्वाली गाते लोग

सल्तनत काल में दो प्रकार की गायन शैली प्रचलित थी– गज़ल और कव्वाली। गज़ल को अरबी भाषा में स्त्रीलिंग मानते थे और इसका अर्थ होता है– 'प्रेमपात्र से वार्तालाप'। एक गज़ल में कम से कम पाँच और अधिक से अधिक ग्यारह शेर होते थे। गज़ल का संग्रह' दीवान' कहलाता है। उस समय की अधिकांश गज़लें श्रृंगार रस में लिखी होती थीं। यही कारण था कि गज़लों का गायन संगीत प्रेमियों को तो अच्छा लगता ही था, साथ–साथ सूफियों को भी प्रिय रहा। गज़ल के साथ–साथ गायन की दूसरी लोकप्रिय शैली–कव्वाली थी। 'कौल' का अर्थ हुआ 'कथन और कौल को गानेवाला 'कव्वाल' कहलाता था और यही गायन शैली कव्वाली कही जाने लगी। गज़ल के विषय को पहले लौकिक प्रेम की दृष्टि से देखा जाए और फिर यदि उसी विषय के प्रेमपात्र को ईश्वरीय मानकर भक्तिमय होकर गाया जाए तो वही कव्वाली का रुप ले लेती है। कुछ क्षेत्रीय राज्यों के शासक जैसे जौनपुर का सुल्तान हुसैन शरकी

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

एवं ग्वालियर का शासक मानसिंह संगीत को संरक्षण देते थे। सिंकदर लोदी ने भी संगीत को संरक्षण देने की परंपरा का बड़े पैमाने पर पालन किया।

मुग़ल बादशाहों ने संगीत को बढ़ावा दिया। अकबर के दरबार में गायकों को सात भागों मे बाँटा गया था जिनमें सप्ताह का एक दिन गायकों के एक भाग के लिए होता था। तानसेन अकबर के नवरत्नों में से एक थे। तानसेन के रचे हुए बहुत से ध्रुपद प्राप्त होते हैं जिनमें बादशाह अकबर के गुणगान हैं। उस समय यह प्रथा थी कि जिसके राजाश्रय में जो गायक रहता था, वह अपनी रचनाओं में उस आश्रयदाता का गुणगान किया करता था।

ऐसी कथा प्रचलित है कि जब तानसेन दीपक राग गाते थे तो दीपक अपने आप जल उठता था और जब राग मेघ–मलहार गाते थे तो वर्षा होने लगती थी। क्या अब यह संभव है कि दीपक राग गाने पर दीपक स्वंय जल उठे और मेघ–मलहार गाने पर वर्षा होने लगे ?

मुग़ल काल में ख्याल गायन का भी आविष्कार हो चुका था। ख्याल दो प्रकार के होते थेः– बड़ा ख्याल और छोटा ख्याल। बड़ा ख्याल की लय धीमी रहती है और छोटे ख्याल की लय मध्यम व तीव्र एवं चंचलतापूर्वक रहती है। इसलिए बड़े ख्याल के मुकाबले छोटा ख्याल अधिक लोकप्रिय हुआ। बाद के मुग़ल बादशाहों ने संगीत को कोई विशेष प्रोत्साहन नहीं दिया।

बिहार में संगीत

यद्यपि बिहार में संगीत का प्रारंभ वैदिक युग में हुआ, परन्तु तुर्की शासन में बिहार में सूफी संतों के माध्यम से संगीत की प्रगति हुई। मुग़ल साम्राज्य के पतन के बाद शास्त्रीय संगीत का प्रसार मुग़ल दरबार से लखनऊ बनारस और पटना तक हुआ। बिहार के पटना, गया, आरा, छपरा, इत्यादि शहर संगीत के प्रमुख केन्द्र थे। पटना में ख्याल और ठुमरी को विशेष लोकप्रियता मिली। इसके अतिरिक्त गजल दादरा, कजरी और चैती गायन लोकप्रिय शैलियाँ थीं। बिहार में चिन्तामणि नामक एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए, जिन्हें 'बिहारी बुलबुल' की उपाधि दी गई थी।

© WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

1. आईए याद करें:–

(i) उर्दू की उत्पत्ति किस शताब्दी में हुई?

(क) आठवीं (ख) दसवीं (ग) ग्यारहवीं (घ) बारहवीं

(ii) उर्दू का शब्दिक अर्थ क्या है?

(क) शिविर (ख) घर (ग) महल (घ) दरबार

(iii) ईरानी सिंधू को क्या कहते थे?

(क) हिन्दू (ख) हिन्दी (ग) हिन्द (घ) हिंदीक

(iv) अकबर के नवरत्न में इनमें से कौन थे?

(क) तानसेन (ख) तुलसीदास (ग) कबीर (घ) बैरम खाँ

(v) तुलसी दास ने किस ग्रंथ की रचना की?

(क) राम चरित मानस (ख) मेघदूतम्

(ग) अभिज्ञान शकुन्तलम् (घ) आनन्द मठ

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :–

(a) उर्दू का विकास कैसे हुआ ?

(b) लौकीक साहित्य के बारे में पाँच पंक्तियों में बताएँ।

(c) 'रहिम' कौन थे ? उनके द्वारा रचित किसी एक दोहा को लिखें।

(d) 'हम्जानामा' क्या है ?

(e) पहाड़ी चित्रकला में किन–किन विषयों पर चित्र बनायी जाती थी ?

(f) गज़ल और कव्वाली में अंतर बताएँ।

3. चर्चा करें :–

(1) क्षेत्रीय भाषा एवं साहित्य के विकास का क्या महत्व है ?

(2) आपके घर में जो भाषा बोली जाती है उसका प्रयोग लिखने में कब से शुरु हुआ ?

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED